अरेबिक गोंद का एक मात्र स्त्रोत: कुमट "*अकेशिया सेनेगल विल्ड.*"

विशेषतायें एवं लाभ:

- कुमत की लकड़ी का उपयोग कृषि यन्त्र, ऊँट गाड़ी के पहिये एवं बच्चे मकान बनाने में उपयोग किया जाता है।
- सूखा व अकाल के समय कुमट की पत्तियॉ व फलियॉ पशुओं के लिए बहुत ही उपयोगी चारा हैं। जिसमें 20 प्रतिशत क्रूड प्रोटीन होता है।
- बीजों में 65 प्रतिशत तक प्रोटीन की मात्रा पायी जाती है।
- इस पेड़ की लम्बी जड़ों से मजबूत रेशा प्राप्त करके मजबूत धागे, रस्सियां व मछली पकड़ने के जाल बनाये जाते हैं।
- मरूस्थल के किसान इसे औषधि के रूप में उपयोग करते हैं।
- फूलों के रस के काढ़े को आंखों के छूत के रोग दूर करने में भी प्रयोग किया जाता है।
- जड़ों के रेशे पेचिश तथा सुजाक रोग के उपचार में भी उपयोगी हैं।
- इस पेड़ के तने से गोंद जिसे अरेबिक गोंद कहा जाता है आसानी से प्राप्त होती है।
- सूखा मौसम में गोंद का उत्पादन अधिक होता है।

कृषि-वानिकी:

- कुमत वृक्षारोप से कृषि वानिकी में मृदा उवर्कता में सतत् वृद्धि होती है और जैविक नाइट्रोन का स्थिरीकरण होता है।
- इसे बंजर भूमि में एवं पथरीली तथा शुष्क रेतीले टिब्बों में आसानी से लगाया जा सकता है।
- एक वर्ष का पौधा मानसून के समय 45 x 45 x 45 से.मी. का गड्ढा खोदकर रोपित किया जाता है।
- मेड़ों एवं थावला के ऊपर या भूमि खण्डों पर अच्छे उपचारित बीजों को सीधे वर्षा काल में बुवाई कर पौध उगाया जा सकता है।
- बीजों को गुनगुने पानी में रात भर उपचारित कर बुवाई से अंकुरित जल्दी होता है।
- इस प्रकार बोये गये बीज एक सप्ताह के अन्दर पूर्ण अंकुरित हो जाते हैं।
- प्रथम वर्ष में खरपतवार निकालते रहने से पौधे की ऊंचाई 10 से 20 से.मी. तक बढ़ जाती है।
- कृषि वानिकी में पौधे से पौधे की दूरी 5 x 5 या 6 x 6 मीटर रखना चाहिए ताकि पौधे उगाने के साथ-साथ खेती भी की जा सके।
- अधिक गोंद उत्पादन हेतु इथोफोन हारमोन के इंजेक्शन का उपयोग कुमट तना में दिया जाता है।
- कुमुट के बीज को मेड़ पर बुवाई कर जैव फेसिंग का एक उत्तम विकल्प है।

आय:

- पचकुटा सब्जी में कुमटा के बीजों को एकत्रित कर, विशेष सब्जी कैर के फल व सांगरी के साथ मिलाकर बनाई जाती है।
- कुमटा का बीज बाजार में तकरीबन 40/- रूपये प्रति कि.ग्रा. बिकता है।
- इसके तने से गोंद जिसे "गम अरेबिक अथवा अरेबिक गोंद" भी कहा जाता है, प्राप्त होती है।
- अरेबिक गोंद 6 वर्ष की आयु के पौधे पर निकाला जाता है। तब यह गोंद गंधहीन व नि:स्वाद होती है।
- गोंद उत्पादन 500 ग्राम प्रति वृक्ष प्रतिवर्ष प्राप्त की जा सकता है। लेकिन यह वृक्ष की आयु एवं स्वस्थ्य पर निर्भर करता है।
- 6 वर्ष बाद पौधे से गोंद निकालना शुरू करेगें तो किसान को 60-80 रूपये प्रति पेड़ प्रतिवर्ष आय प्राप्त होगी।
- कुमटा का शुद्धगोंद बाजार में कम से कम 800/- से 1000/- रूपये प्रति किलोग्राम बिकता है।

संकलन:

डॉ. बिलास सिंह

कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग

निदेशक

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान

कृषिमण्डी, नया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005